ग्रन्थ–प्रणयन के पूर्व भाुद्ध प्रवचन–काल का समीक्षात्मक अध्ययन

शशि उपाध्याय
शोध–छात्रा, हिन्दी विभाग
मगध विश्वविद्यालय, गया

साहित्य समाज का दर्पण होता है। इसके प्रमाण में संस्कृत का यह प्रचलित श्लोक ckj&ckj m)r fd;k tkrk g & lkfgR; lekt L; ni.k Hkofr A*A fdlh Hkh lekt ;k देश के तत्कालीन साहित्य को बिना पढ़े–सुने उस समय के सामाजिक, आर्थिक, jktuhfrd] /kkfed] lkinkf;d o lkLdfrd fLFkfr;k&ifjfLFkfrk dk irk yxkuk dfBu dk; gA ijkrRoork vkj bfrgkl dkjk u blfy, lkfgत्य को विशेष महत्व दिया है। अतः स्पष्ट है कि साहित्य समाज का दर्पण है। साहित्य में समाज की सारी गतिविधियों, fØ;kdykik dk tku&vutku fp=.k gkrk gA blfy, lkfgR; dk v/;;u dj ge सहजता से उस समाज की सारी विशेषताओं से अवगत हो जाते है। साहित्य की इसी विशषताओं को उजागर करने के लिए संस्कृत में एक श्लोक प्रचलित है – 'सहितस्यभावः lkfgR;*A

peer reviewed

भारतीय परिप्रेक्ष्य में लिपि के आविष्कार से पूर्व मेधावी गुरु–शिष्य अपने पुस्तकों को मौखिक ही सही–सही ज्ञान रखने की शक्ति रखते थे, क्योंकि लिपि के बिना टंकण, मुद्रण vkfn dkj[kkuk dk fodkl rc ugh gk ldk FkkA Lejj.k j[ku dh ,l fof/k dk Hkkjr में 'कंठस्थ विधा' कहते हैं। इसका शाब्दिक अर्थ है कंठ में स्थित ज्ञान या विद्या। प्राचीन भारतीय साहित्य कंठस्थ विधा के आश्रय लेकर ही पल्लवित–पुष्पित होती रही। वेद का ,d uke *Jr* Hkh gA vkt Hkh dN x#dyk e cPp on dk ikB djr gA djk.k dk कंठस्थ करने वाले मुस्लिम मौलवी का पद पाते हैं। विश्व साहित्य का अधिकांश प्राचीन xFk oDrk&Jkrk dk vcyc ydj dgk ¼fy[kk½ x;k gA on 0;kl jfpr egkHkkjr dh कथा का विस्तार व्यास वैशम्पायन, वैशम्पायन–जनमेजयख सौति तथा संजय, धृतराष्ट्र आदि वक्ता और श्रोता के रूप ही संभव हो पाया है। रामायण की कथा भी वक्ता–श्रोता (शिव, पार्वती, काकभुशुण्डि, गरुड़ आदि) के आश्रय से ही आगे बढ़ती है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि प्राचीन काल में ग्रंथ–प्रणयण काय शुरु नहीं हुआ FkkA dBLFk fo/kk d ipyu u xFk&i.k;.k dh t:jr dk egll ugh gku fn;k gkxkA rc iBu&ikBu d lk/ku xFk ugh FkA rkRi; ;g g fd ikphu dky e iopu ;k ekf[kd :Ik l iBu&ikBu ;k v/;;u&v/;kiu dk dk; lpk: :i l pyrk jgkA bl ;x e ofnd lfgrk, vkfn fofo/k xFk Hkh ugh FkA ml le; vkpk; d }kjk पढ़ाये गये विषय को शिष्य बार–बार दुहराते हुए कंठस्थ करते थे।

ऋग्वेद से तत्कालीन शिक्षा विधान के विषय में पर्याप्त जानकारी प्राप्त होती है। vkpk; dk ?kj ;k vkJe gh fo|ky; FkkA ;gh ir आचार्य अपने शिष्यों को जिसमें उनके पुत्र, संबंधी आदि भी होते थे, वैदिक शास्त्रीय शिक्षा देते थे। यह आश्रम गुरुकुल कहलाता था। शिष्य गुरुकुल में ही रहकर अपने पाठ को पूरा करते थे। आचार्य शिष्यों से ग्रंथ कंठस्थ करवाते हुए ध्यान रखते की शब्दों के उच्चार.k e fdlh rjg dh xyrh rk नहीं हो रही है। शिक्षा का मौखिक विधान 'तप' था। इसके प्रभाव से ही विशिष्ट विद्वानों का बौद्धिक विकास होता था। शिक्षा मौखिक अभ्यास द्वारा दी जाती थी। ऋग्वेद के एक मंत्र में शिक्षा पानेवाले विद्यार्थी की तुलना बरसात में बोलने वाले e<d l dh xb gA iopu rFkk mPpkj.k dk cgr egRo FkkA

mDr dFku dk fl) dju d fy, _Xon e ,d _pk g ft le mYy[k fd;k गया है कि ''मेढ़क दूसरे मेढ़क की बोली को उसी तरह दुहराता है जैसे शिष्य, गुरु या vkpk; d opu dkA**[1] _Xon d ,d nlj jkpd ेत्र में एक प्रकाश के मानसिक चिन्तन और ध्यान का उल्लेख किया गया है ''जिसके फलस्वरूप ज्ञान या प्रकाश को पूर्णता मिलती है और जिसे प्रवचन द्वारा प्राप्त कर लेने पर शिष्य स्वयं प्रवक्ता आचार्य cuu d ;kX; gkr g] Bhd ml idkj ft l idkj lkRlj&Hkj pipki x.Md itU; x/k d vku ij ckyu yxr gA**[2] ml le; iopu vkj mPpkj.k dk cgr egRo FkkA mPpkj.k d lkRk idkj vkj okd dh pkj voLFkkvk dk o.ku feyrk gA _Xon d ,d e= ekufld fpUru rFkk /;ku dk mYy[k feyrk g ft ld QyLo:l Kku dh i.krk ikIr gkrh g vkj शिष्य स्वयं प्रवक्ता या आचार्य बन जाता है।

ikfy f=fiVd d v/;;u l Hkh Kkr gkrk g fd Hkxoku c) d iopu Hkh मौखिक ही थे। शिष्य उनके सभी प्रवचनों की स्मृति में ही रखने का प्रयत्न करते रहते थे। bl ckr d db iek.k f=fiVd e gh feyr gA vxRrj fudk; d *mrnXnXx* e Hkxoku c) d mu ie[k fHk{k&fHk{k.kh rFkk mikld&mikfldkvk dh ,d yEch lph हैं, ''जिन्होंने साधना की विशिष्ट शाखाओं में दक्षता प्राप्त करने के अतिरिक्त भगवान के प्रवचनों के स्मरण करने में भी विशेषता प्राप्त कर ली थी।''[3]

mnkgj.kkFk ,d ckj nj l vk; g, lku uked fHk{k dk Hkxoku c) iNr g *dgk fHk{k ! reu /ke dk dl le>k \' भगवान बुद्ध के इस प्रश्न का उत्तर देते हुए 'सोन' नामक भिक्षु ने सम्पूर्ण सोलह अष्टक वर्गों को सस्वर सुना दिया। भगवान बुद्ध उस भिक्षुक d mRlkgo)u d लिए अनुमोदन करते हुए कहते हैं ''साधु भिक्षु ! सोलह अष्टक वर्गों को तुमने अच्छे से ध्यान रखा है, तुम्हारा वचन खुला है, निर्दोष है, अर्थ को साफ–साफ दिखा nu oky gA**[4]

इसी प्रकार भगवान बुद्ध के ''प्रवचनों अथवा उपदेशों को अधिक विस्तृत रूप से धारण dju oky Hkh vud cgJr] Lefroku fHk{k g, FkA mue l vud /ke/kj] lRrfiVd Fk] vud fou;&/kj Fk] vud ekfud/kj FkA**[5] इनके विषय में त्रिपिटक में अनक बार प्रशंसापूर्वक कहा गया है – 'बहुरूपता आगतागामा धम्मधरा विनयधरा मातिकाधरा।'

mi;Dr rF;k के विवेचन से यह निष्कर्ष निकलता है कि निःसन्देह वक्ता–श्रोता ijEijk vFkok ekf[kd v/;;u&v/;kiu dh ijEijk d ckn gh xFk&i.k;u dky dk शुभारंभ हुआ होगा, किन्तु एक निश्चित काल का पता लगाना कठिन है कि वह कब से शुरू हुआ।

lanHk& lwph %&

1- ’यदेश्षामन्यो अन्यस्य वाचं शाक्तस्येव वदति शिक्षमाणः’ – ऋग्वेद 7/103/5

2- संवत्सरं शशयाना ब्राह्मणा व्रतचारिणः। वाचं पज्रन्यर्जिन्वितां प्रमण्डूका वादिषुः। _Xon 7@103

3- c)pfj;k] iFke LkLdj.k] i-l- & 469 & 72

4- उदान, हिन्दी अनुवाद – भिक्षु जगदीश काश्यप, पृ-l- & 79

5- egkoXx & 2] 10 vkj pYyoXx & 1]12 e] nh?kfudk; d egkifjfuok.klrA rrh; Hkk.kokj e firdk d vud LFkyk eA

❖

peer reviewed